मूत्राशय कैंसर

मूत्राशय कैंसर हांग कांग में आम कैंसर है। यहाँ 1 साल में लगभग 400 नए मामले आते हैं, जिनमें से स्वाभाविक तौर से महिलाओं की तुलना में पुरुष ज़्यादा होते हैं। इनका अनुपात 3:1 है और यह 55 और 70 के बीच के आयु वर्ग के लोगों के बीच आम है। अगर मूत्राशय कैंसर का पता शुरू के चरण में चल जाता है, तो इसका इलाज अच्छी तरह हो सकता है, लेकिन ख़ास तौर से मूत्राशय कैंसर की पुनरावृत्ति होना आसान होता है। इस कारण से, जिन लोगों को इसमें स्वास्थ्य-लाभ होता है, उन्हें नियमित रूप से फ़ॉलो-अप जाँच के लिए आने की ज़रूरत होती है।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

1. मूत्राशय कैंसर क्या है?

मूत्राशय निठले पेट में खोखला अंग होता है, जिसमें मूत्र का संग्रह होता है। जब मूत्राशय की लाइनिंग के भीतर कोशिकाओं की वृद्धि की प्रक्रिया ख़राब हो जाती है, तो इससे मूत्राशय कैंसर हो सकता है।

ज़्यादातर मूत्राशय ट्यूमर छोटे मशरूम जैसे होते हैं, जो पहले पहल मूत्राशय की सबसे भीतरी परत में प्रकट होते हैं, जिन्हें निपल ट्यूमर कहा जाता है। कुछ समय के बाद, वे मूत्राशय की मांसपेशियों की दीवार और शरीर के अन्य भागों में फैल जाते हैं।

2. मूत्राशय कैंसर का ख़तरा किन्हें होता है?

- **धूम्रपान**

  धूम्रपान करने वाले लोगों में मूत्राशय कैंसर होने की संभावना धूम्रपान न करने वालों वाले लोगों की तुलना में 2 से 3 गुना तक ज़्यादा होती है।

- **लगातार रसायनों के संपर्क में रहने वाले लोग**

  उन लोगों को जोखिम होता है, जो रबर, रसायन, डाइंग, पेंट्स, लेदर व प्रिंटिंग उद्योगों में काम करते हैं।-जो लोग अकसर हेयर डाई का इस्तेमाल करते हैं, वे भी इस श्रेणी में आते हैं।

- **वे लोग जिन्हें अकसर मूत्राशयशोध होता है**

  जिन लोगों को मूत्राशय की समस्याएँ या मूत्राशयशोध होता है, उन्हें मूत्राशय कैंसर होने की संभावना ज़्यादा होती है।

- **पारिवारिक इतिहास**

  जिन लोगों के परिवार में ऐसे सदस्य होते हैं, जिन्हें मूत्राशय कैंसर होता है, उन्हें यह रोग होने की संभावना ज़्यादा होती है।

- **लिंग**

  पुरुष

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

3. मूत्राशय कैंसर की रोकथाम कैसे करें?

- धूम्रपान छोड़ दें और दूसरों के धूम्रपान के प्रभाव से बचें
- संरक्षित भोजन या संरक्षकों वाले भोजन के बजाय ताज़ा भोजन करें
- ज़्यादा पानी पियों
- ज़्यादा फल और हरी सब्ज़ियाँ खाएँ
- डाई और जैविक समाधानों के संपर्क से बचें
- वस्त्र, रंगाई, चमड़ा, रसायन, कृषि और मुद्रण उद्योगों में काम करने वाले लोगों के लिए निवारक समाधान, जैसे दस्ताने, मास्क और वर्षा के जूते पहनना, आदि।

4. मूत्राशय कैंसर के कारण क्या हैं?

मूत्राशय कैंसर के कारण कारणों का पता नहीं है, लेकिन यह पता चला है कि लंबे समय तक कैंसर पैदा करने वाली सामग्री का अवशोषण करना इसके कारणों में से एक है। इस सामग्री में सिगरेट के रसायन शामिल हैं। जब इनमें से कुछ पदार्थ शरीर के भीतर चयापचय प्रक्रिया से गुजरते हैं, तो उनमें से कुछ मूत्र के माध्यम से निकल जाते हैं, और उस समय मूत्राशय की झिल्ली उनके संपर्क में आती है, जिससे मूत्राशय के भीतर कोशिकाओं की असामान्य वृद्धि होती है।

इसके अलावा, जिन स्थानों पर सिस्टोसोमियासिस (मूत्राशयशोध पैदा करने वाला परजीवी) पाया जाता है, वहाँ मूत्राशय कैंसर के मामले ज़्यादा होते हैं। संरक्षित खाद्य पदार्थों या नाइट्रेट वाले खाद्य पदार्थों को अकसर खाने से भी मूत्राशय कैंसर होने का जोखिम बढ़ जाता है।

5. क्या मूत्राशय कैंसर के लक्षण आसानी से पहचाने जा सकते हैं?

मूत्राशय कैंसर के लक्षण मूत्राशयशोध, मूत्राशय की पथरी या किडनी की पथरी के लक्षणों के समान होते हैं, और हीमेटूरिया या रक्त वाला मूत्र सबसे समान लक्षण है। हो सकता है कि शुरू के चरण में यह अकसर होता रहे, और इससे दर्द न हो। जब स्थिति बिगड़ जाती है, तो मूत्र में रक्त के थक्के हो सकते हैं, जिसके कारण व्यक्ति को मूत्र करते समय दर्द हो सकता है या हो सकता है कि वे मूत्र न कर पाएँ। अगर ट्यूमर मूत्राशय की गर्दन को घिस देता है, तो रोगी को बार-बार मूत्र करने की ज़रूरत होगी और मूत्र करने में मुश्किल होगी या ऐसा महसूस होगा कि मूत्र अवरुद्ध हो गया है।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

6. मूत्राशय कैंसर की जाँच और निदान कैसे करें?

अगर आपको संदेह होता है कि आपको मूत्राशय कैंसर हो गया है, तो मूत्र जाँच का सुझाव दिया जाता है। पुरुषों के लिए, गुदा का परीक्षण किया जाएगा। महिलाओं के लिए, गुदा परीक्षण और योनि परीक्षण किया जाना चाहिए। इसकी जाँच के लिए मूत्र का नमूना प्रयोगशाला में भेजा जाता है कि क्या वहाँ कैंसर की कोशिकाएँ हैं। अगर ज़रूरी होगा, तो मूत्र विशेषज्ञ आगे के परीक्षण करेंगे, जिनमें शामिल हैं:

i. सिस्टोस्कोप और बायोप्सी

इस परीक्षण के लिए स्थानीय या सामान्य एनेस्थीसिया की ज़रूरत होगी। मूत्राशय की लाइनिंग के परीक्षण के लिए डॉक्टर सीधे मूत्राशय में देखने के लिए पतली, प्रकाशयुक्त ट्यूब उसमें डालते हैं।आगे के परीक्षण और रोग विश्लेषण के लिए सिस्टोस्कोप की सहायता से कोशिकाओं के नमूने निकाले जा सकते हैं।

ii. नसों में पायलोग्राम

इससे किडनी, मूत्राशय और मूत्र प्रणाली की असामान्य स्थितियों का पता लगाया जा सकता है। डॉक्टर डाई का इंजेक्शन देता है, जो मूत्र में उत्सर्जित होती है, जिससे डॉक्टर एक्स-रे पर किडनी, मूत्रमार्ग और मूत्राशय की स्थितियाँ देख सकता है।

डाई के कारण रोगी को छोटी अवधि के लिए जलन, और उत्तेजना का अनुभव हो सकता है, लेकिन इससे मृत्यु विरल रूप से होती है।

अगर इसकी पुष्टि हो जाती है कि रोगी को मूत्राशय कैंसर है, तो रोगी को रक्त जाँच, छाती का एक्स-रे परीक्षण और निम्नलिखित परीक्षण करवाने होते हैं। इनसे कैंसर की वृद्धि के चरणों की पहचान होती है, और इस तरह इनका इस्तेमाल इलाज की योजनाओं का फ़ैसला करने के लिए होता है।

iii. कंप्यूटर स्कैन

विभिन्न कोणों से पेट और श्रोणि का स्कैन करने के लिए, जिससे सटीक रूप से ट्यूमर के स्थान और आकार का पता चलता है। रोगी को ख़ास डाई पीने की ज़रूरत होती है। इस प्रक्रिया में 10 मिनट से ज़्यादा लगते हैं।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

iv. रेडियाआइसोटोप्स बोन स्कॅन

यह इसका पता लगाने के लिए होता है कि क्या कैंसर की कोशिकाएँ कंकाल में फैल गई हैं। परीक्षण के दौरान, चिकित्सा कर्मी रोगी की बाजू में रक्त वाहिका में रेडियोआइसोटोप की छोटी ख़ुराक इंजेक्ट करता है। इसके बाद वे शरीर में रेडियोधर्मी सूचकांक की छोटी राशि का माप करते हैं। कैंसर से प्रभावित कंकाल रेडियोधर्मिता की बड़ी मात्रा दिखाता है और डॉक्टर को देखना होता है कि क्या कैंसर फैल गया है। इंजेक्ट की जाने वाली रेडियोआइसोटोप की ख़ुराक इतनी छोटी होती है कि इससे रोगी को विकिरण की समस्या नहीं होती।

v. अल्ट्रा-सोनिक पेट और श्रोणि स्कैन

यह पेट और श्रोणि की छवि को संश्लेषित करने के लिए किया जाता है। मूत्राशय को फुलाने के लिए रोगी को बड़ी मात्रा में तरल पदार्थ पीना होता है। इस जाँच में कुछ मिनट का समय लगता है और रोगी को जाँच से पहले 4 घंटे तक खाना और पीना रोकना होता है।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

7. मूत्राशय कैंसर के इलाज क्या हैं?

अगर मूत्राशय कैंसर शुरुआती चरण में होता है, जिसका मतलब है कि कैंसर ट्यूमर ने अभी तक मूत्राशय की मांसपेशी को घिसा नहीं है, तो कैंसर की कोशिकाओं को खुरचने के लिए सिस्टोस्कोप का इस्तेमाल किया जा सकता है। डॉक्टर मूत्राशय को सीधे कैंसर-रोधी दवाओं से भरने, या B.C.G. इम्युनोथैरेपी का इस्तेमाल करने पर भी विचार कर सकता है:

1. मूत्राशय के ट्यूमर का ट्रांज़ुरेथ्रल निकास - TURBT

मूत्राशय की भीतरी लाइन के अंदर मूत्राशय ट्यूमर को निकालने के लिए डॉक्टर सिस्टोस्कोप, और भी घाव से रक्त के बहाव को रोकने के लिए विद्युत की छोटी मात्रा का इस्तेमाल करते हैं। सर्जरी के बाद कुछ दिनों तक रोगी को हीमेटूरिया का अनुभव हो सकता है।

2. इंट्रावेसिकल कीमोथैरेपी

नरम ट्यूब के साथ, डॉक्टर मूत्रमार्ग के माध्यम से मूत्राशय की भीतरी परत में कैंसर-रोधी दवाएँ डालता है। दवाओं के कारण भीतरी लाइनिंग में जलन हो सकती है, जिसके कारण रोगी को दर्द महसूस हो सकता है या बार-बार मूत्र आ सकता है।

3. BCG इंट्रावेसिकल इम्युनोथैरेपी

वैक्सीन मूत्राशय में प्रतिक्रिया पैदा कर सकती है, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली उत्तेजित होती है और कैंसर कोशिकाओं की संख्या कम होती है। साप्ताहिक दवाई के आधार पर, यह इलाज 6 सप्ताह तक चलता है। इलाज के दौरान, चिकित्सा कर्मी वैक्सीन को सीधे मूत्राशय में सम्मिलित करने के लिए कैथेटर का इस्तेमाल करते हैं। समय के साथ-साथ, कुछ दुष्प्रभाव प्रकट हो सकते हैं, जैसे हीमेटूरिया, खाँसी, बुखार, ठंड लगना, ताक़त, मतली, बार-बार मूत्र आना, पेशाब करने पर दर्द महसूस होना और त्वचा पर लाल चकत्ते, आदि, लेकिन ये धीरे-धीरे गायब हो जाते हैं।

4. सिस्टेक्टॉमी

अगर कैंसर की कोशिकाएँ मूत्राशय की मांसपेशी को घिस देती हैं, तो डॉक्टर मूत्राशय के भागों या पूरे मूत्राशय को निकालने पर विचार करेंगे। इसके बाद रोगी के पेट में स्टोमा बनाने की ज़रूरत होगी, ताकि उस के माध्यम से मूत्र निकल सके। कुछ रोगियों में उनकी आँतों से कृत्रिम

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

मूत्राशय बनाया जा सकता है। फ़िलहाल, यह ऑपरेशन न्यूनतम इनवेसिव सर्जरी के रूप में किया जा सकता है, जिसमें बड़े घाव को कुछ छोटे छिद्रों से बदला जाता है।

अगर पूरा मूत्राशय निकालने का फ़ैसला किया जाता है, तो पुरुष रोगियों की प्रोस्टेट ग्रंथि, मूत्र मार्ग के कुछ भाग और मूत्राशय के पास की लसीका ग्रंथियों को भी निकालने की ज़रूरत होती है। महिला रोगियों में उनका गर्भाशय, गर्भाशय ग्रीवा के पास की लसीका ग्रंथि और मूत्रमार्ग का भाग निकालने की ज़रूरत होती है।

5. विकिरण उपचार

इसमें उच्च ऊर्जा विकिरण से कैंसर कोशिकाओं को समाप्त किया जाता है। अगर ऐसा पता चलता है कि रोगी का ऑपरेशन करना संभव नहीं है, तो पूर्ण इलाज के स्थान पर, उसके लिए केवल कीमोथैरेपी या रेडियोथैरेपी और कीमोथैरेपी साथ-साथ किए जाने की सिफ़ारिश की जा सकती।

6. प्रशामक इलाज

अगर कैंसर व्यापक रूप से फैल चुका है, तो इस बात को प्राथमिकता दी जाएगी कि उसके चिह्नों और लक्षणों को कम किया जाए और रोगी के जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखा जाए। सिस्टेमिक कीमोथैरेपी से चिह्न और लक्षण शांत हो सकते हैं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। विकिरण उपचार मूत्र की आवृत्ति और हीमेटूरिया को भी कम कर सकता है।

7. मूत्र का कृत्रिम संग्रहण

मूत्राशय को निकालने के बाद, डॉक्टर तत्काल मूत्र के संग्रह का स्थान बनाने की कोशिश करेंगे। रोगी की स्थितियों के आधार पर, निम्नलिखित विधियों पर विचार किया जा सकता है:

- स्टोमा

  मूत्र के लिए कृत्रिम मार्ग बनाने का सबसे आम तरीका आँत के हिस्से को काटना और इसके सिरे को दो मूत्र मार्गों से जोड़ना और दूसरे सिरे को पेट की दीवार से बाहर निकालना होता है। पेट की दीवार के मार्ग को स्टोमा कहा जाता है, जहाँ मूत्र के संग्रह के लिए कुछ ख़ास प्रकार के गोंद से वाटर प्रूफ़ प्लास्टिक बैग जोड़ दिया जाता है। स्टोमा से रोगी के सामान्य जीवन में बाधा नहीं आती, लेकिन इससे रोगी का स्वरूप ज़रूर प्रभावित होता है।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

- मूत्राशय पुनर्निर्माण सर्जरी

  इसका दूसरा तरीका आँत के कुछ भाग को काटकर कृत्रिम मूत्राशय बनाना है। इसमें डॉक्टर आँत के भाग को गेंद के आकार के बैग का रूप देता है। इसके बाद वे इसे मूत्रमार्ग के ऊपर सिल देते हैं। इस तरह नया मूत्राशय बन जाता है और उसे यूरेटर से जोड़ दिया जाता है। रोगी मूत्र बैग का इस्तेमाल किए बिना, मूत्र मार्ग के माध्यम से सामान्य रूप से मूत्र कर सकता है।

  चूँकि रोगी के मूत्राशय की नसें अब काम नहीं करतीं, इसलिए उसे ख़ास तौर से रात में सोने के दौरान, मूत्र पर कुछ कम नियंत्रण की समस्या हो सकती है। ऑपरेशन के बाद, पुरुष रोगी नपुंसक हो सकता है जबकि महिला रोगी संभोग के दौरान कुछ अलग ढंग से अनुभव कर सकती हैं।

- मूत्र कैथेटर ऑपरेशन

  यह स्टोमा के समान है। मूत्र बैग बनाने के लिए रोगी की आँत के कुछ हिस्से का इस्तेमाल किया जाता है, जिसे फिर पेट के अंदर रख दिया जाता है। यह प्लास्टिक के छोटे कैथेटर से जुड़ा होता है, जो स्टोमा के माध्यम से गुजरता है, और इस तरह मूत्र निकलने का मार्ग देता है। मूत्र दिन में चार से पाँच बार तक निकाला जा सकता है। रोगी को मूत्र मैनुअल रूप से निकालना होता है, लेकिन उसे मूत्र बैग साथ रखने की ज़रूरत नहीं होती।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

8. मूत्राशय कैंसर की जटिलताएँ क्या हैं?

कीमोथैरेपी या विकिरण उपचार प्राप्त करने के बाद, रोगी को विभिन्न दुष्प्रभाव हो सकते हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- गुदा में पीड़ा
- आँतों क्या प्रेरित होना, जिसके परिणामस्वरूप डायरिया हो सकता है
- मूत्राशयशोध जिसके कारण मूत्र की आवृत्ति बढ़ जाती है और मूत्र करने पर दर्द होता है
- योनि संकुचित हो जाती है, जिसके कारण संभोग मुश्किल या असुविधाजनक हो जाता है
- पुरुष नपुंसकता
- थकान
- त्वचा पर उस स्थान पर दर्द हो सकता है, जहाँ विकिरण उपचार की जाती है और बाल झड़ सकते हैं
- वमनकारी और उल्टी
- कम सुनाई देना
- टाँगों में दर्द और अंग सुन्न होना

ऊपर के दुष्प्रभावों में दवा से आराम मिल सकता है, और इलाज के बाद वे क्रमशः गायब हो सकते हैं। तथापि, विकिरण उपचार के कारण हाथ और मूत्राशय को स्थायी नुक़सान हो सकता है, जैसे आँत के संचालन में बढ़ोतरी, लगातार डायरिया या बार-बार पेशाब आना। विकिरण उपचार के बाद, आँत और मूत्राशय के अंदर रक्त वाहिकाएँ नाज़ुक हो सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप हीमेटूरिया हो सकता है और मल में रक्त आ सकता है। यह परिघटना विकिरण उपचार के बाद कुछ महीनों या सालों तक रह सकती है और परीक्षण और इलाज के लिए रोगी को डॉक्टर को सूचित करना चाहिए। अगर श्रोणि विकिरण ज़रूरी हो, तो रोगी के यौन जीवन और प्रजनन पर स्थायी प्रभाव पड़ सकता है।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

9. मूत्राशय कैंसर के रोगी अपनी देखभाल कैसे करते हैं?

1. नियमित परामर्श और फ़ॉलो-अप परीक्षण

चूँकि मूत्राशय कैंसर आसानी से लौट आता है, इसलिए रोगी को अस्पताल में नियमित रूप से जाँच करवानी चाहिए। यह सिफ़ारिश की जाती है कि इलाज के बाद 2 सालों के दौरान, रोगी को सिस्टोस्कोप परीक्षण करवाना चाहिए और इसके बाद हर साल परीक्षण होना चाहिए। रोगी को अपने शरीर की स्थिति का ध्यान रखना चाहिए और अगर कोई बदलाव होते हैं या नए चिह्न और लक्षण होते हैं, तो डॉक्टर के साथ चर्चा करने या उसे सूचित करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

2. स्टोमा का इस्तेमाल करना सीखें

मूत्राशय निकाले जाने के बाद, मूत्र करने के लिए रोगी को स्टोमा के इस्तेमाल की ज़रूरत होगी। हो सकता है कि रोगी को शुरू में इसमें कुछ मुश्किल हो। वास्तव में, स्टोमा के साथ ज़्यादातर रोगी सामान्य जीवन बिता सकते हैं। अपना कामकाज जारी रखने की साथ-साथ, वे विभिन्न गतिविधियों में भी भाग ले सकते हैं, जिनमें तैराकी शामिल है।

इसका आदी होने के लिए रोगी को कुछ समय देना चाहिए। अस्पतालों में, प्रायः ख़ास तौर से प्रशिक्षित नर्सें होती हैं, जिन्हें "स्टोमा नर्स" कहा जाता है। उनकी ज़िम्मेदारी होती है कि वे रोगियों को स्टोमा की देखभाल और सफ़ाई करना, और यह सिखाएँ कि स्टोमा के इस्तेमाल से पैदा होने वाली समस्याओं से कैसे निपटें। मूत्र बैग बदलने और स्टोमा की सफ़ाई करने के बारे में यह सलाह दी जाती है कि रोगी इसके बारे में सीखने के लिए अपने साथ रिश्तेदार को भी बुला ले, ताकि घर पर लौटने के बाद, ज़रूरत होने पर रिश्तेदार इसमें सहायता कर सके।

3. परिवार के सदस्यों और अन्य रोगियों के साथ साझा करना

जब रोगी का मूत्राशय कैंसर का इलाज होता है और उसके बाद दुष्प्रभाव होने पर रोगी में अवसाद पैदा हो सकता है। उसे अपनी भावनाओं के बारे में अपने परिवार के सदस्यों के साथ बात करने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे उसके भावों और पीड़ा के दबाव को शांत करने में मदद मिलती है। इसके अलावा, रोगी उन कुछ गतिविधियों में भाग ले सकता है जो रोगी समूहों द्वारा आयोजित की जाती हैं। इससे न केवल रोग और इलाज के बारे में उनकी समझ में बढ़ोतरी होगी, बल्कि वे ऐसे रोगियों से भी मिलेंगे जो समान रोग से पीड़ित हैं, जिससे उन्हें अपने अनुभव और भावों को साझा करने में मदद मिलेगी। 4. मनोवैज्ञानिक रूप से, उसे समर्थन और प्रोत्साहन

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved

मिलता है।

4. विशेषज्ञों से परामर्श लेना

अगर इलाज से रोगी के यौन प्रकार्यों और प्रजनन क्षमताओं पर प्रभाव पड़ता है, तो उसे इस स्थिति पर चिकित्सा कर्मियों के साथ चर्चा करनी चाहिए। अगर ज़रूरी होगा, तो वे उसे पेशेवर मार्गदर्शन और समर्थन के लिए संबंधित विशेषज्ञों या परामर्शदाताओं के पास भेज देंगे।

5. स्वास्थ्य की देखभाल करना

रोगी को धूम्रपान छोड़ देना चाहिए, ताज़ा फल और सब्ज़ियाँ ज़्यादा खानी चाहिए, उच्च वसा और संरक्षित खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए, ज़्यादा व्यायाम करना चाहिए और शारीरिक और मानसिक रूप से फ़िट रहना चाहिए।

Copyright © 2018 Hospital Authority. All rights reserved